इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केंद्र ने लोक देवता देवनारायण पर एक मल्टीमीडिया प्रकाशित किया है जिसे इस क्यू आर कोड को स्कैन करके देखा जा सकता है। श्री कल्याण जोशी ने अपने पिता पद्मश्री श्रीलाल जोशी के साथ इस परियोजना में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी।

इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केंद्र की स्थापना एक राष्ट्रीय संस्थान के रूप में भारतीय कलाओं को संरक्षित एवं शोध के उद्देश्य से की गई है। भारतीय सभ्यता और संस्कृति के अविच्छिन्न इतिहास, उसकी विविधता और बहुलता को शोध के माध्यम से देश की विभिन्न क्षेत्रों, विभिन्न भाषाओं, तथा सामाजिक समूहों में, सरल एवं सहज रूप से प्रसारित करने का कार्य केन्द्र कर रहा है।

फड़-वाचन कार्यक्रम

5 सितंबर - फड़, पाबू जी और भोपाओं का परिचय
6 सितंबर - श्री गणेश स्मरण, पाबू जी का स्मरण, देवल चारण का परवाड़ा
7 सितंबर - गोगा जी के विवाह का परवाड़ा
8 सितंबर - सण्ड्या का परवाड़ा, मिर्जा खान का परवाड़ा
9 सितंबर - पाबू जी के विवाह का परवाड़ा, केशर घोड़ी का परवाड़ा
10 सितंबर - खीची का पर्व, रूपनाथ जी का पर्व

(स्थान : आईजीएनसीए चौपाल)

संस्कृति मंत्रालय
भारत सरकार
सत्यमेव जयते

कला यस्मिन् प्रतिष्ठिता :
इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र
Indira Gandhi National Centre for the Arts

राजस्थान के लोक देवता

पाबूजी

फड़-वाचन कार्यक्रम
5-10 सितंबर, 2024

कला यस्मिन् प्रतिष्ठिता :
इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र
Indira Gandhi National Centre for the Arts
www.ignca.gov.in

मौखिक काव्य भारतीय लोक-जीवन का एक अभिन्न अंग है। विविध रूप में यह पूरे भारतवर्ष के विभिन्न क्षेत्रीय भाषाओं और बोलियों में उपलब्ध है। उनमें से कुछ विगत अनेक शताब्दियों से भारतीय जन-मानस को निर्बाध रूप से प्रेरित करते रहे हैं। इन मौखिक आख्यानों के माध्यम से कथावाचक और दर्शकों के बीच एक तादात्म्य स्थापित होता है जिसके द्वारा दर्शकों को मानवीय मूल्यों, निडरता, सहिष्णुता, देशप्रेम, सेवा, अध्यात्म इत्यादि की प्रेरणा मिलती है। ये लोक-कथाएँ धार्मिक रूप से महत्त्वपूर्ण स्थानों, पूजा पद्धतियों, पर्यावरण संरक्षण, दैवीय-अनुकम्पाओं के साथ-साथ अन्य विषयों को वीरतापूर्वक उजागर करती हैं। साथ ही समकालीन सामाजिक, सांस्कृतिक और धार्मिक व्यवस्थाओं में अन्तर्निहित महत्त्वपूर्ण एवं प्रचलित मान्यताओं को देखने की एक नई दृष्टि प्रदान करती हैं। अन्य क्षेत्रों की भाँति राजस्थान में भी कई मौखिक काव्य प्रचलित हैं जिनमें देवनारायण, पाबूजी, रामदेवजी, गोगाजी, तेजाजी और ढोला-मारू प्रमुख हैं।

पाबूजी की फड़ राजस्थान के एक प्रमुख धार्मिक महाकाव्य को चित्रित करता है। १४वीं शताब्दी में जन्मे राजस्थान के राठौर प्रमुख पाबूजी को भगवान का अवतार माना जाता है। उनकी पूजा राजस्थान की रैबारी जनजाति द्वारा की जाती है। पाबूसर के भोपा, पाबूजी की कहानी सुनाने में पारंगत एवं इस कला के पारंपरिक कथाकार हैं। राजस्थान के गांवों में पाबूजी को एक तपस्वी माना जाता है। उनके शिष्यों द्वारा प्रदान की जाने वाली पशु चिकित्सा सेवाओं के लिए उनका आशीर्वाद मांगा जाता है। फड़ पूजा के उपरांत, एक पवित्र धागे से ताबीज बनाकर बुरी नकारात्मक ऊर्जा से बाधित बच्चों को ठीक करने के लिए भी उन्हें आमंत्रित किया जाता है। यह कथा तत्कालीन सामाजिक, सांस्कृतिक, धार्मिक व्यवस्था और जीवन-शैली जैसे अनेक विवरणों के साथ पाबूजी के जीवन और कार्यों को उजागर करती है।